بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्ब: जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़
बयान फ़र्मूदा 10 जुलाई, 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.
(वफ़ा महीने की तिथि 10 ,1406 हश)

आँहुज़ूर ﷺ के सच्चे प्रेमी सय्यदना हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. की जूद-ओ-सख़ा (उदारता एवं दानशीलता) का ईमान वर्धक वर्णन।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 10.07.2026
محلہ احمدیہ قادیان پنجاب 143516

أَشْهَدُ أَنْ لا إِلَـهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ
امّا بعد فاعوذ بالله من الشيطٰن الرجيم۔بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمَنِ الرَّحِیۡمِ
اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمَنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مَالِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡهِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡهِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशहुद, तअव्वुज़, सूर: फ़ातिहा, की तिलावत के बाद हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल् अज़ीज़ ने फ़रमाया: हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहब इर्फ़ानी रज़ि. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम की सीरत बयान करते हुए तहरीर फ़रमाते हैं कि आप अलैहिस्सलाम की ज़िंदगी में जूदो-सख़ा की एक और शान भी जल्वागर है जो शफ़ाअत और सिफ़ारिश का रंग रखती है। कभी कभी आप अलै. की ख़िदमत में कोई ऐसा मांगने वला आ जाता जिसके सवाल को पूरा करना आप अलै. के इख़्तियार में न होता बल्कि इस का तअल्लुक़ दूसरों से होता। इस हालत में आप अलै. इस बात का भी ध्यान रखते थे कि उसके फ़ायदे के लिए ऐसे लोगों को भी सिफ़ारिश कर देते थे जिनको अपनी किसी ज़ाती ज़रूरत के लिए भी कभी कुछ न कहते।

मिर्ज़ा इमाम उद्दीन साहब इस सिलसिले के सख़्त दुश्मन थे और हज़रत अलै. के ख़ानदान के साथ इन को अदावत थी मगर हज़रत मसीह मौऊद अलै. इन की अदावत को दुनियावी मुआमलात में हमेशा नज़र-अंदाज़ कर देते थे। यानी उनके साथ सुलूक में कभी भी आप अलै. ने फ़र्क़ नहीं किया। वो बसार औक़ात हज़रत मसीह मौऊद अलै. से माली मदद ले लेते और बावुजूद इन एहसानात के मुख़ालफ़त में भी लगे रहते थे। एक मर्तबा उस ने एक घोड़ा फ़रोख़्त करना था और इस के लिए उस ने बेहतर मौक़ा ये तजवीज़ किया कि इस घोड़े को

जम्मू ले जावे और हज़रत हकीमुल उम्मत मौलवी नूरुद्दीन साहब ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि. के ज़रीए पेश करे ताकि इस पर उसे एक मुनासिब रक़म मिल जाए। इस चीज़ को ज़ेहन में रख कर उस ने ख़ुद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से दरख़्वास्त की कि आप अलै. एक सिफ़ारिशी ख़त हज़रत हकीमुल उम्मत के नाम लिख दें। आप अलै. ने उसकी दरख़्वास्त को रद न फ़रमाया और बिला देर किये मौलवी साहब रज़ि. के नाम एक सिफ़ारिशी ख़त दे दिया।

मिर्ज़ा मुहम्मद बेग वल्द मिर्ज़ा अहमद बेग होशियारपुरी का ख़ानदान सख़्त बेदीन और सिलसिले का दुश्मन होने की वजह से उन के ख़ानदान से आप अलैहिस्सलाम के तअल्लुक़ात ख़ुशगवार (मधुर सम्बन्ध) न थे। मिर्ज़ा मुहम्मद बेग ने जम्मू में मुलाज़मत करना चाही और हुज़ूर अलै. से दरख़्वास्त की कि हज़रत हकीमुल उम्मत रज़ि. के नाम सिफ़ारिशी ख़त दे दिया जाए ताकि वो मदद कर दें। आप अलै. ने बिला-ताम्मुल ख़त लिख दिया कि जबकि इनके वालिद मुझ से अदावत (दुश्मनी) रखते हैं लेकिन कोई बात नहीं कि इन की सख़्ती के बदले नर्मी इख़्तियार कर के **'इद्फ़अ् बिल्लती हिया अहसन'** (اِدْفَعْ بِالَّتِیْ ہِیَ اَحْسَنُ) का सवाब हासिल किया जाए। अतः इनकी मदद करके पुलिस के महकमे में नौकर लगवा दें।

हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहब इर्फ़ानी रज़ि. लिखते हैं कि क़ादियान में एक शख़्स निहाल चंद ब्राह्मण था जो अपनी जवानी के दिनों में मशहूर मुक़द्दमेबाज़ था और हज़रत साहब अलै. के ख़ानदान के साथ अक्सर मुक़ाबला और शरारतें करता रहता था। अख़ीर उम्र (अंतिम आयु) में इस की माली (आर्थिक) हालत निहायत ख़राब हो गई। यहां तक कि कई बार इसको अपनी रोज़ाना ज़रूरत के लिए भी मुश्किलात पेश आती थीं। उसने एक बार हज़रत अक़दस अलै. के दरवाज़े पर आकर मुलाक़ात की ख़ाहिश की और अपना क़िस्सा बयान किया। आप अलै. ने तसल्ली दी, और 25 रुपये की रक़म दी, और फ़रमाया: जब ज़रूरत हो मुझे बताना। फिर उसका नियम बन गया। वह महीने दो महीने बाद आता और मअकूल रक़म ले जाता। एक बार हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ि. से भी क़र्ज़ लिया। जब आप रज़ि. ने वापसी का तक़ाज़ा किया तो कहने लगा: मिर्ज़ा जी तो मुझे हमेशा रुपया देते हैं और इससे मेरा गुज़ारा चलता है। आप अलै. ने कभी पैसे वापस नहीं मांगे। अतः आप रज़ि. ने भी उसको छोड़ दिया।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ि. लिखते हैं कि पादरी वाल्टर साहब एम.ए. जो वाई.एम.सी.ए. के सेक्रेटरी थे, ने अपनी किताब में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुतअल्लिक़ ये राय लिखी है कि मिर्ज़ा साहब अपनी स्वभाव में सरल और फ़ैयाज़ाना जज़बात रखने वाले थे। उनकी अख़लाक़ी जुरअत (नैतिक सहस) जो उन्होंने अपने मुख़ालिफ़ीन की तरफ़ से सख़्त मुख़ालफ़त और ईज़ा-रसानी (कष्ट देने) के मुक़ाबले में दिखाई, यक़ीनन क़ाबिले-तह्सीन है। सिर्फ़ एक मक़नातीसी (चुम्बकीय) जज़ब और निहायत ख़ुशगवार अख़लाक़ रखने वाला शख़्स ही ऐसे लोगों की दोस्ती और वफ़ादारी हासिल कर सकता था जिनमें से कम अज़ कम दो ने अफ़ग़ानिस्तान में अपने अक़ाइद की वजह से जान दे दी मगर मिर्ज़ा साहब का दामन नहीं छोड़ा। मैं ने बाज़ पुराने अहमदियो से उनके अहमदी होने की वजह पूछी तो अक्सर ने सब से बड़ी वजह मिर्ज़ा साहब अलै. के ज़ाती असर और उनके जज़ब (आकर्षण, कशिश) और खींच लेने वाली शख़्सियत को पेश किया।

आप अलै. जो कुछ किसी को देते वो किसी नुमाइश के लिए न होता था बल्कि महज़ ख़ुदा तआला की रज़ा के लिए और शफ़क़त अला ख़ल्क़ुल्लाह (प्राणियों से सहानुभूति) के नुक़त

ए ख़याल (दृष्टि) से देते। इस लिए आम तौर पर आप अलै. निहायत मख़फ़ी तरीक़े से अता फ़रमाते थे और कभी दूसरों को अमली सबक़ देने के वास्ते अलानिया भी करते थे। आप अलै. की आदत थी कि साइल की बात को रद न करते और ये भी मअमूलात में से था कि बाज़ लोगों की ज़रूरतों का एहसास करके इससे पहले कि वह कोई सवाल करें उनकी मदद किया करते थे।

1904ء में एक बार एक मुख़लिस मुहाजिर को कुछ रुपये दिए कि मौसम-ए-सरमा (ठण्ड) है आप को कपड़ों की ज़रूरत होगी, हालांकि इस की तरफ़ से कोई सवाल न था। फिर आप (अलै.) बहुत मख़फ़ी तौर पर लोगों को देते और इस में दोस्त दुश्मन का अन्तर न था। शैख़ फ़तह मुहम्मद साहब कहते हैं कि जब मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर होता तो आप अलै. हमेशा मेरा किराया अदा करने के लिए तैयार होते थे। जबकि मुझे ज़रूरत न होती लेकिन हज़रत अलै. की रूहे-सख़ावत (दानशील आत्मा) इस क़दर अज़ीमुश्शान थी कि आप अलै. बग़ैर मांगे हमेशा पेश कर देते हैं और यह मेरे साथ ही मामला न था बल्कि अक्सर को देते रहते थे।

शाम और अरब देश से कुछ लोग आते और आप अलै. उनको बाज़ औक़ात भारी रक़ूम बतौरे रास्ते के ख़र्च दे देते क्योंकि वे बहुत दूर-दराज़ से आए होते। कभी कभी लोग सवाल न करते और एक पर्ची पर लिख देते। किसी को यह मालूम न होता था कि उसने सवाल किया है लेकिन जब हज़रत अक़दस अलै. अंदर से ज़रुरत मंद के लिए कुछ भेजते तो पता लगता या कभी अंदर तशरीफ़ ले जाते वक़्त कह जाते कि तुम बैठो मैं आता हूं। हज़रत साहब अलै. आते तो मालूम होता कि आप अलै. साइल के लिए उस की मतलूबा चीज़ नक़्दी या कपड़ा ले कर आ रहे हैं।

दावे से पहले आप अलै. के भाई की शादी के वक़्त उन्होंने कुछ बकरे मंगवाए थे जिन्हें नंगल बाग़बाना का एक शख़्स चराया करता था। एक दिन हुज़ूर अलै. सैर को चले जा रहे थे कि रास्ते में उस आदमी को देखा। उसके साथ उसका बेटा भी था लेकिन नंगे पांव था। हुज़ूर अलै. ने उसकी तरफ़ देख कर फ़रमाया: मियां तुम नंगे पांव फिर रहे हो तुम्हें कांटे नहीं चुभते? उसने अर्ज़ की कि हुज़ूर! मेरे पास जूती नहीं है। हुज़ूर अलै. ने अपनी जूती उतारी और उसको पहनाई। उसने माज़रत (इनकार) की तो आप अलै. ने फ़रमाया कि नहीं! इसको पहनो और इस्तेमाल करो। फिर आप अलै. नंगे पांव वापस घर तशरीफ़ ले आए। उस वक़्त आप अलै. की उम्र बीस या तीस साल थी।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम अपने मोहसिन व पेशवा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इक़्तिदा (अनुसरण) में जूदो-सख़ा के पैकर (नमूने) थे लेकिन कई बार हमें यह भी नज़र आता कि किसी हिकमत व मस्लिहत के कारण आप अलै. ने साइल को देने से एहतराज़ (रुक जाना) भी फ़रमाया। शैख़ याक़ूब अली साहब रज़ि. लिखते हैं कि 1889ء में आप अलै. लुधियाना में मौजूद थे। आप अलै. के पास एक साइल आया और कहा कि मेरा अज़ीज़ फ़ौत हो गया है। मेरे पास कफ़न-दफ़न के लिए कुछ इंतिज़ाम नहीं है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुकर्रम क़ाज़ी ख़्वाजा अली साहब रज़ि. को फ़रमाया कि इसके साथ जा कर कफ़न का सामान कर दो। आम तौर पर हुज़ूर अलै. की ये आदत न थी बल्कि साइल को दे देते थे। क़ाज़ी साहब साइल के साथ रुख़्सत हुए और कुछ देर बाद हंसते हुए वापस आए और कहा कि साइल ने मिन्नत-समाजत और ख़ुशामद शुरू कर दी थी कि आप न जाएं और जो देना है दे दें। मैं ने कहा

कि नहीं! मुझे यही हुक्म हुआ है तो उसने कहा न कोई मरा है, न कफ़न-दफ़न की ज़रूरत है। ये मेरा पेशा है। अब मेरी पर्दा-दरी न करो और वो चला गया।

आप अलै. बच्चों की ख़ाहिश के मुताबिक़ भी अता फ़रमाया करते थे। बीबी रानी वालिदा अज़ीज़ बेगम ज़ौजा हकीम मुहम्मद उमर साहब क़ादियान ने बयान किया कि मैंने 1901ء में ख़त लिख कर बैअत की। 1902ء में क़ादियान आई तो मेरी छोटी लड़की साथ थी। हज़रत साहब (अलै.) सुब्ह के वक़्त सैर को बाग़ की तरफ़ तशरीफ़ ले जाते। मैं भी अक्सर औक़ात साथ जाती थी। एक दफ़ा सुब्ह के वक़्त जब हज़रत साहब अलै. खाना खा रहे थे तो मैं भी आ गई। मेरी छोटी लड़की ने रोना शुरू किया। हज़रत साहब अलै. ने पूछा क्या कहती है? मैं ने कहा: रोटी मांगती है। आप अलै. ने रोटी दी मगर वो चुप न हुई। फिर पूछा: अब क्या कहती है? मैंने अर्ज़ की ये वो रोटी मांगती है जो हुज़ूर अलै. खा रहे हैं। हुज़ूर अलै. ने वो रोटी उसे दे दी जो हुज़ूर अलै. ख़ुद खा रहे थे और फिर वह चुप हो कर खाने लगी।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि पिछले ख़ुत्ब: में मैंने वाक़िआ बयान किया था कि लंगर का ख़र्च बढ़ गया तो हज़रत मसीह मौऊद (अलै.) ने हज़रत अम्मा जान (रज़ि.) के ज़ेवर बेच कर ख़र्च पूरा किया। इस पर गुज़श्ता हफ़्ते मेरे से किसी ने सवाल किया है कि क्या बीवी का ज़ेवर ज़रूरत पड़ने पर पति के काम आ सकता है और ख़र्च किया जा सकता है। तो वाज़ेह हो कि हज़रत मसीह मौऊद (अलै.) क़र्ज़ लिया करते थे और वापस फ़रमाया करते थे। चुनांचे इस बारे में एक रिवायत है। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब (रज़ि.) बयान करते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत उम्मुल मोमिनीन से रुपया क़र्ज़ लिया। गंदुम (गेहूं) ख़रीद कर लंगर का ख़र्च और घर का ख़र्च पूरा किया क्योंकि बहुत सारा खाना आप अलै. के घर से ही पकता था। इसके बाद आप (अलै.) ने चौधरी रुस्तम अली साहब से 500 रुपये मंगवाए और कुछ घी की चाटियां मंगवाईं और हज़रत अम्मा जान रज़ि. का क़र्ज़ अदा किया।

एक वाक़िआ खाने में बरकत का है। हज़रत मियां अब्दुल्लाह साहब सनौरी (रज़ि.) कहते हैं एक दफ़ा हज़रत मसीह मौऊद (अलै.) ने चंद मेहमानों की दावत की। खाने के वक़्त इतने ही और मेहमान आ गए। हज़रत अम्मा जान रज़ि. ने कहा कुछ खींच तान कर खाने का इंतिज़ाम हो जाए लेकिन ज़रदा बहुत कम है, ये नहीं भेजते। हज़रत साहब (अलै.) ने फ़रमाया: नहीं! यह मुनासिब नहीं है। तुम ज़रदे का बर्तन मेरे पास लाओ। आप अलै. ने इस बर्तन पर रुमाल डाल दिया और फिर रुमाल के नीचे अपना हाथ गुज़ार के अपनी उंगलियां ज़रदे में दाख़िल कर दीं और फिर कहा सब के वास्ते खाना निकालो। जब यह खाना पेश किया गया तो सब ने खाया और कुछ ज़रदा बच भी गया।

यह आप अलै. की जूदो सख़ा की कुछ बातें हैं जिनमें अपने आक़ा व मौला की इत्तिबा में आप अलै. ने ऐसा नमूना दिखाया कि अपने और ग़ैर यहाँ तक कि दुश्मन भी फ़ैज़याब होते रहे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ، عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْ کُمْ وَادْعُوْہُ یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है,सम्पर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात,पंजाब - 18001032131